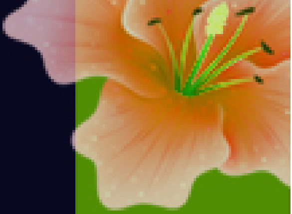

रमज़ानुल् करीम

क़ुरआन और हदीस की रौशनी में

कम्पोज़िंग

मुहम्मद इमरान इस्हाक़ शेख

चिखली, पुना।

रमज़ानुल् करीम

(क़ुरआन और हदीस की रौशनी में)

कम्पोज़िंग

मुहम्मद इमरान इस्हाक़ शेख

चिखली, पुना।

अस्सलातु वस्सलामु अलैक

या रसूलअल्लाह

अस्सलातु वस्सलामु अलैक

या हबीब अल्लाह

अस्सलातु वस्सलामु अलैक

या नबी अल्लाह

अस्सलातु वस्सलामु अलैक

या नूर अल्लाह

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

किताब का नाम ः **रमज़ानुल् करीम**
(क़ुरआन और हदीस की रौशनी में)

कम्पोज़िंग ः मुहम्मद इमरान शेख

इशाअत ः जून 2015 (शाबान 1436 हिजरी)

हवाला ः 1) अल्-मिन्हाजुस्सवी
(डॉ. मुहम्मद ताहिरुल् क़ादरी)
2) हिदायतुल् उम्मह
(डॉ. मुहम्मद ताहिरुल् क़ादरी)
3) दीगर

क़ीमत ः

फेहरिस्त

नं.	उनवान	पेज नं.
1.	अर्ज़	6
2.	रमज़ान आया रमज़ान आया	8
3.	क़ुरआनी आयतें	9
4.	रमज़ान	10
5.	रोज़ा	13
6.	तरावीह	18
7.	तरावीह की दुआ	20
8.	ऐतकाफ	21
9.	सूरह क़द्र	23
10.	शबे क़द्र	23
11.	शबे क़द्र के नवाफिल	25
12.	नेकियों में इज़ाफा	27
13.	जुदा हो रहा हैं रमज़ां महीना	31
14.	ईदुल् फित्र	33

अर्ज़

सब ताअरीफें अल्लाह सुब्हान व तआला के लिए जो सारे आलमीन का खालिक़ व मालिक और पालनहार हैं । और सरकार-ए-दो आलम, नूर-ए-मुजस्सम, हादी-ए-अकबर, रहबर-ए-आज़म, इमामुल् अम्बिया हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और उनकी आल पर और उनके सहाबा पर बेशुमार दरूद व सलाम ।

अल्लाह तआला ने हमें जो बेशुमार नेअमतें अता फरमाई हैं उन तमाम नेअमतों में एक अज़ीम तरीन नेअमत रमज़ान का प्यारा महीना हैं । यह महीना बरकत वाला हैं, रहमत वाला हैं, मग़्फिरत वाला हैं । हमें चाहिए के हम अदब व एहतराम के साथ इस महीने का पुरा फायदा उठाए । अल्लाह तआला की जितनी रहमतें और बरकतें हम इस महीने के ज़रिए जमा कर सकते हैं, हमे जमा करनी चाहिए । और यह तब मुम्किन हैं जब हमारे पास रमज़ानुल् मुबारक की बुनियादी मालूमात होगी ।

इस छोटे से रिसाले के ज़रिए हमने कुरआन व हदीस की रौशनी में रमज़ानुल् मुबारक की बुनियादी मालूमात

आप तक पहुंचाने की कोशिश की हैं । हम चाहते हैं कि कुरआन व हदीस का इल्म सिर्फ उलमाओं तक ही मेहदूद न रहे बल्कि हर मुसलमान का घर कुरआन व हदीस के इल्म से और नूर से रौशन रहे और इस से हर मुसलमान फैज़ हासिल करता रहे ।

आपसे गुज़ारिश हैं कि आप इसे पढ़ें, अमल करें और जितनी हो सके रमज़ानुल् मुबारक में नेकियां जमा करें । क्योंकि इन्सान क़यामत के दिन एक एक नेकी के लिए तरस्ता फिरेगा मगर कुछ हासिल न होगा ।

अल्लाह अपने प्यारे हबीब (सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम) के सदके में ,हमारी गलती और खामियों को मुआफ फरमाकर , उम्मते मुस्लिमां तक रमज़ानुल् मुबारक की कुछ बुनियादी मालूमात पहुंचाने की इस छोटी सी कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमाए और तमाम उम्मते मुस्लिमां को रमज़ान की रहमतों और बरकतों से नवाज़े और हिदायत पर क़ायम रहने की तौफीक़ अता फरमाए । आमीन ।

मुहम्मद इमरान शेख
चिखली, पुना (महाराष्ट्र)

रमज़ान आया रमज़ान आया

रमज़ान आया , रमज़ान आया ,
गुनाहों की बख्शिश का सामान आया ।

खुशी और मुसर्रत भी हैं साथ लाया,
खज़ाने खुदा के लुटाने हैं आया ।

कुछ खबर भी हैं रमज़ान की तुमको लोगों,
दो जहां के सफर का उजाला हैं आया ।

करो नेकियां , भरो झोलियां,
खुदा की रज़ा का हैं सामान आया ।

ये दुआ अजिज़-ए-**इमरान** की हैं मौला,
रहें ता-उम्र हम पर रहमतों का साया ।

क़ुरआनी आयतें

आयत नं. 1) रमज़ान का महीना (वो हैं) जिस में क़ुरआन उतारा गया हैं, जो लोगों के लिए हिदायत हैं और (जिस में) रहनुमाई करने वाली और (हक़ व बातिल में) फर्क़ बताने वाली साफ साफ निशानियां हैं, इसलिए तुम में से जो कोई इस महिने को पा ले तो वह इसके रोज़े ज़रूर रखे। (सूरह बक़रा 2:185)

आयत नं. 2) ऐ ईमान वालों, तुम पर उसी तरह रोज़े फर्ज़ किए गए हैं जैसे तुमसे पहले लोगों पर फर्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (सूरह बक़रा 2:183)

आयत नं. 3) और रोज़ादार मर्द और रोज़ादार औरतें, और अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करने वाले मर्द और हिफाज़त करने वाली औरतें, और कस़रत से अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और ज़िक्र करने वाली औरतें, अल्लाह ने इन सब के लिए बख्शिश और अज़ीम अज्र तैयार फरमा रखा हैं। (सूरह अल्-अह्ज़ाब 33:35)

आयत नं. 4) और आप कुछ जानते हैं कि क्या हैं शबे क़द्र। शबे क़द्र बेहतर हैं हज़ार महीनों से। (सूरह क़द्र 97:2-3)

रमज़ान

हदीस नं. 1) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जब रमज़ान का महिना आता हैं तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शयातीन को ज़न्जीरों से जकड़ दिया जाता हैं।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 672, हदीस 1800)

हदीस नं. 2) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने रमज़ान की दूसरे महीनों पर फज़ीलत बयान करते हुए फरमाया, जो शख्स रमज़ानुल् मुबारक में ईमान और इख्लास के साथ क़याम (इबादत) करता हैं वह अपने गुनाहों से इस तरह पाक हो जाता हैं जिस तरह आज ही उसकी मां ने उसे जनम दिया हो।

(सुनन निसाई, जिल्दः 4, सफाः 158, हदीसः 2208)

हदीस नं. 3) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जब माहे रमज़ान की पहली रात होती हैं, शयतानों और सरकश जिन्नों को बेड़ियां पहना दी जाती हैं और जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और उनमें से कोई दरवाज़ा खोला नहीं जाता, जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और उनमें से कोई दरवाज़ा बंद नहीं

किया जाता । एक पुकारने वाला पुकारता हैं, ऐ खैर तलब करने वाले आगे आ, ऐ बुराई तलाशने वाले रुक जा, और अल्लाह कई लोगों को जहन्नम से आज़ाद कर देता हैं। रमज़ान की हर रात यूंही होता रहता हैं।

(सुनन तिरमिज़ी, जि. 3, स. 66, हदीस 682)

हदीस नं. 4) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, मेरी उम्मत को माहे रमज़ान में पाँच तोहफे मिले हैं, जो इससे पहले किसी नबी को नहीं मिले। पहला ये कि जब रमज़ान की पहली रात होती हैं तो अल्लाह उनकी तरफ नज़रे रहमत फरमाता हैं और जिस पर उसकी नज़र पड़ जाए उसे कभी अज़ाब नहीं देगा। दुसरा ये कि शाम के वक़्त उनके मुंह की बू अल्लाह को कस्तूरी की खुश्बू से भी ज़्यादा अच्छी लगती हैं। तीसरा ये कि फरिश्तें हर दिन हर रात उनके लिए बख्शिश की दुआ करते रहते हैं। चौथा ये कि अल्लाह अपनी जन्नत को हुक्म देता हैं कि मेरे बन्दो के लिए तैयारी कर ले और मज़ीन (ज़ीनतवाली) हो जा, ताकि वो दुनिया की थकावट से मेरे घर और मेरे दारे रहमत में पहुंच कर आराम हासिल करें। पाँचवा ये कि जब (रमज़ान की) आखरी रात होती हैं उन सब को बख्श दिया जाता हैं। एक सहाबी ने अर्ज़ किया, क्या ये शबे क़द्र हैं ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने

फरमाया, नहीं । क्या तुम जानते नहीं हो कि जब मजदूर काम से फारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें मजदूरी दी जाती हैं ?

(इमाम बैहक़ी र.अ. - शुअबुल् ईमान, जि. 3, स. 303, हदीस 3603)

हदीस नं. 5) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, तुम्हारे पास रमज़ान का महीना आया । अल्लाह तआला ने तुम पर इस के रोज़े फर्ज़ किए हैं । इसमें जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शरीर शयातीन जकड़ दिए जाते हैं । अल्लाह तआला के नज़्दीक इस माह में एक ऐसी रात हैं जो हज़ार महीनों से अफझल और बेहतर हैं । जो इसके सवाब से मेहरूम रहा पस वह मेहरूम रहा ।

(सुनन निसाई, जिल्दः 4, सफाः 129, हदीसः 2106)

रोज़ा

हदीस नं. 6) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, अल्लाह तआला फरमाता हैं कि इब्ने आदम (औलादे आदम) का हर अमल उसके लिए हैं सिवाए रोज़े के, क्योंकि रोज़ा मेरे लिए हैं और उसकी जज़ा मैं ही देता हूं। (रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आगे फरमाया) रोज़ा ढ़ाल हैं और जिस दिन तुम में से कोई रोज़े से हो तो न फहश (बेहुदा और बेवजह की) बातें करे और न झगड़े। अगर उसे कोई गाली दे या लड़े तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं। क़सम हैं उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान हैं, रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह तआला को मुश्क की खुश्बू से ज़्यादा प्यारी हैं। रोज़ादार के लिए दो खुशियां हैं जिनसे उसे फरहत (खुशी) होती हैं। इफ्तार करे तो खुश होता हैं और जब अपने रब से मिलेगा तो रोज़े की वजह से खुश होगा।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 673, हदीस 1805)

हदीस नं. 7) हज़रत सहल बिन साद (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जन्नत में एक दरवाज़ा हैं जिसको रय्यान कहा जाता हैं। क़यामत के दिन रोज़ादार उससे दाखिल होंगे और उनके सिवा उससे कोई दाखिल नहीं होगा। कहा जाएगा, रोज़ादार कहां हैं ?

रोज़ादार खड़े हो जाएंगे । उस दरवाज़े में उनके अलावा कोई दाखिल नहीं होगा । जब वह दाखिल हो जाएंगे तो दरवाज़ा बंद कर दिया जाएगा और कोई दूसरा उससे दाखिल नहीं होगा ।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 671, हदीस 1797)

हदीस नं. 8) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, रोज़ा और कुरआन बन्दे के लिए क़यामत के दिन सिफारिश करेंगे । रोज़ा कहेगा, ऐ मेरे रब मैंने इसे खाने और ख्वाहिशे नफ्स से रोका लिहाज़ा इसके लिए मेरी सिफारिश क़बूल फरमा । और क़ुरआन कहेगा, ऐ मेरे रब मैंने इसे रात के वक़्त नीन्द से रोका लिहाज़ा इसके लिए मेरी सिफारिश क़बूल कर । रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, दोनों की सिफारिश क़बूल कर ली जाएगी ।

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 174, हदीस 6626)

हदीस नं. 9) हज़रत उसमान इब्न अबुल् आस (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि मैंने रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को फरमाते हुए सुना, जैसे तुम मैदाने जंग में (दुश्मन से बचाव के लिए) ढ़ाल इस्तेमाल करते हो, ऐसे ही रोज़ा दोज़ख से ढ़ाल हैं । बेहतर (तरीक़ा) हर महीने तीन दिन रोज़ा रखना हैं ।

(सुनन इब्ने माजा, जि. 1, स. 525, हदीस 1639)

हदीस नं. 10) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) का बयान हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, हर चीज़ की कोई न कोई ज़कात हैं और जिस्म की ज़कात रोज़ा हैं और रोज़ा आधा सब्र हैं।

(सुनन इब़्ने माजा, जि. 1, स. 555, हदीस 1745)

हदीस नं. 11) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, सेहरी खाया करो क्योंकी सेहरी में बरकत हैं।

(सहीह मुस्लिम, जि. 2, स. 770, हदीस 1095)

हदीस नं. 12) हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, सेहरी खाना बरकत हैं इसलिए इसे न छोडा करो ख्वाह पानी का एक घूंट ही पी लिया करो क्योंकि अल्लाह और उसके फरिश्ते सेहरी करने वालों पर अपनी रहमतें नाज़िल करते हैं।

(मुस़्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 3, स. 12, हदीस 11101)

हदीस नं. 13) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जब तुम में से कोई शख्स (रोज़े की हालत में) भूल जाए और कुछ खा पी

ले तो उसे चाहिए कि वह अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि उसे अल्लाह तआला ने ही तो खिलाया और पिलाया हैं ।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 682, हदीस 1831)

हदीस नं. 14) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरिव बिन अल्-आस (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, इफतार के वक़्त रोज़ादार की दुआ को रद् नहीं किया जाता ।

(सुनन इब्ने माजा, जि. 2, स. 364, हदीस 1753)

हदीस नं. 15) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, अल्लाह तआला ने फरमाया, आदमी का हर अमल उसके लिए हैं और हर नेकी का सवाब 10 गुना से लेकर 700 गुना हैं । सिवाए रोज़े के । कि वो मेरे लिए हैं और मैं ही उसकी जज़ा अता करता हूं । यक़ीनन वह (रोज़ादार) खाना और नफ्सानी ख्वाहिशात को मेरी वजह से छोड देता हैं और अपना पीना और शह्वत मेरी वजह से छोड देता हैं । पस वो (रोज़ा) मेरे लिए हैं और मैं ही उसकी जज़ा अता करता हूं ।

(सुनन दारमी, जि. 2, स. 40, हदीस 1770)

हदीस नं. 16) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जो

शख्स (रोज़े की हालत में) झूट बोलना और उसपर अमल करना छोड न दे तो अल्लाह् तआला को उसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वह खाना पीना छोड दे।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 673, हदीस 1804)

तरावीह

हदीस नं. 17) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं, फरमाया कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रमज़ानुल् मुबारक में वित्र के अलावा 20 रक्अत तरावीह पढ़ा करते थे।

(मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा, जि. 2, स. 164, हदीस 7692)

हदीस नं. 18) इमाम अबू ईसा तिरमिज़ी (रज़ीअल्लाहु अन्हु) ने अपनी सुनन तिरमिज़ी में फरमाया, अक्सर अहले इल्म का मज़्हब 20 रक्अत तरावीह हैं जो कि हज़रत अली (रज़ीअल्लाहु अन्हु), हज़रत उमर (रज़ीअल्लाहु अन्हु) और रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दीगर सहाबा-ए-किराम से मरवी हैं और इमाम सुफियान सौरी, इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक और इमाम शाफई (रज़ीअल्लाहु अन्हुम) का यही क़ौल हैं और इमाम शाफई (रज़ीअल्लाहु अन्हु) ने फरमाया, मैंने अपने शहरे मक्का में (अहले इल्म को) 20 रक्अत तरावीह पढ़ते पाया।

(सुनन तिरमिज़ी, जि. 3, स. 169, हदीस 806)

हदीस नं. 19) हज़रत साइब बिन यज़ीद (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं, कि हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ीअल्लाहु अन्हु) के अहद (ज़माना-ए-खिलाफत) में सहाबा-ए-किराम माहे रमज़ान में 20 रक्अत तरावीह पढ़ते थे और उनमें 100 आयत वाली सूरतें पढ़ते

थे और हज़रत उसमान (रज़ीअल्लाहु अन्हु) के अहद (ज़माना-ए-खिलाफत) में शिद्दते क़याम (लंबी रक्अतों) की वजह से वो अपनी लाठीयों से टेक लगाते थे।

(इमाम बैहक़ी र.अ. - सुननुल् कुबरा, जि. 2, स. 496, हदीस 4393)

तरावीह की दुआ

तरावीह की 4 रक्अतें होने पर थोडी देर बैठकर यह दुआ पढ़ेः-

सुब्हानल् मलिकिल् क़ुद्दूस । सुब्हान् ज़िल मुल्की वल् मलकूत । सुब्हान् ज़िल् इज़्ज़ति वल् अज़्मति वल् हैबति वल् क़ुद्रति वल् किब्रियाइ वल् जबरूत । सुब्हानल् मलिकिल् हय्यिल्लज़ी ला यनामु व ला यमूतु । सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल् मलाइकति वर्रूह । अल्लाहुम्मा अजिर्ना मिनन्नार । या मुजीरु या मुजीरु या मुजीर ।

तर्जुमाः- पाक हैं वो मुक़द्दस बादशाह । पाक हैं वो ज़मीन की बादशाही और आसमानों की बादशाही वाला । पाक हैं वो इज़्ज़त और अज़्मत और हैबत और क़ुदरत वाला और बढ़ाई और दबदबे वाला । पाक हैं वो बादशाह, हमेशा ज़िन्दा रहने वाला, जो कभी सोता नहीं और न कभी मरेगा । वह बहुत ही पाक, बहुत ही मुक़द्दस हमारा परवरदिगार और फरिश्तों और रूहों का परवरदिगार हैं । या अल्लाह, हमें दोज़ख से पनाह दे । ऐ पनाह देने वाले, ऐ पनाह देने वाले, ऐ पनाह देने वाले ।

ऐतकाफ

हदीस नं. 20) हज़रत आएशा (रज़ीअल्लाहु अन्हा) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रमज़ान के आखरी दस दिन ऐतकाफ किया करते थे यहां तक कि अल्लाह के हुक्म से आपका विसाल हो गया । फिर आप के बाद आप की अज़्वाजे मुतह्हरात (पाक़ बिवियों) ने भी ऐतकाफ किया हैं ।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 713, हदीस 1922)

हदीस नं. 21) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हर साल रमज़ान में दस दिन ऐतकाफ फरमाते थे और जिस साल आपका विसाल हुआ उस साल आपने बीस दिन का ऐतकाफ किया ।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 719, हदीस 1939)

हदीस नं. 22) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रमज़ान के आखरी अशरे (दस दिन) में ऐतकाफ किया करते थे । नाफेअ कहते हैं की हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ीअल्लाहु अन्हु) ने मुझे मस्जिद में वह जगह दिखाई जहां रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ऐतकाफ फरमाया करते थे ।

(सहीह मुस्लिम, जि. 2, स. 830, हदीस 1171)

हदीस नं. 23) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मुअतकिफ (ऐतकाफ में बैठने वाले) के बारे में फरमाया, वह गुनाहों से रुका रहता हैं। उसके लिए ऐसी नेकियां लिखी जाती हैं जो तमाम नेक आमाल करने वालों के लिए लिखी जाती हैं।

(सुनन इब़्ने माजा, जि. 1, स. 567, हदीस 1781)

हदीस नं. 24) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जो शख्स अल्लाह तआला की रज़ा के लिए एक दिन का ऐतकाफ करता हैं अल्लाह उसके और दोज़ख के दर्मियान तीन खन्दक़ो का फासला कर देता हैं, हर खन्दक़ मशरिक़ से मग़रिब के दर्मियानी फासले से ज़्यादा लंबी हैं।

(मुअज्जमुल् अवसत, जि. 7, स. 220, हदीस 7326)

हदीस नं. 25) हज़रत अली बिन हुसैन (रज़ीअल्लाहु अन्हु) अपने वालिद इमाम हुसैन (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जो शख्स रमज़ान में दस दिन का ऐतकाफ करता हैं उसका सवाब दो हज्ज और दो उमरा के बराबर हैं।

(मुअज्जमुल् कबीर, जि. 3, स. 128, हदीस 2888)

सूरह क़द्र

बिस्मिल्लाहिर्-रहमानिर्-रहीम

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फी लै-ल-तिल् क़द्र । वमा अद्-रा-क मा लै-ल-तुल् क़द्र । लै-ल-तुल् क़द्रि खैरुम्-मिन् अल्फि शह्-र । तनज़्ज़लुल् मलाइकतु वर्रूहु फीहा बिइज़्नी रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्र । सलामुन् हि-य हत्ता मत्-लइल् फज्र ।

तर्जुमाः- बेशक हमनें इसे (क़ुरआन को) उतारा हैं शबे क़द्र में । और आप कुछ जानते हैं कि क्या हैं शबे क़द्र । शबे क़द्र बेहतर हैं हज़ार महीनों से । उतरते हैं फरिश्तें और जिब्रईल इस में अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए । ये सलामती हैं (जो) रहती हैं सुब्ह चमकने (फज्र) तक ।

शबे क़द्र

हदीस नं. 26) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जिसने शबे क़द्र में हालते ईमान में सवाब की ग़र्ज़ से क़याम किया उसके साबिक़ा (पिछले) गुनाह बख्श दिए जाते हैं और जिसने हालते ईमान में सवाब की ग़र्ज़ से रमज़ान के रोज़े रखे उसके भी साबिक़ा (पिछले) गुनाह मुआफ कर दिए जाते हैं ।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 672, हदीस 1802)

हदीस नं. 27) हज़रत आएशा (रज़ीअल्लाहु अन्हा) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, शबे क़द्र को रमज़ान के आखरी अशरे की ताक़ (21, 23, 25, 27, 29) रातों में तलाश किया करो।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 710, हदीस 1913)

हदीस नं. 28) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, शबे क़द्र को रमज़ान के आखरी अशरे में तलाश करो। शबे क़द्र 9 रातें बाक़ी रहने पर हैं या 7 बाक़ी रहने पर या 5 बाक़ी रहने पर हैं।

(सहीह बुखारी, जि. 2, स. 711, हदीस 1917)

हदीस नं. 29) हज़रत आएशा (रज़ीअल्लाहु अन्हा) से मरवी हैं कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बताइए अगर मुझे शबे क़द्र मालूम हो जाए तो मैं उसमें क्या दुआ मांगू ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, कहो, अल्लाहुम्मा इन्न-क उफुव्वुन् करीमुन् तुहिब्बुल् अफ्-व फाअ-फु अन्नी (या अल्लाह तू बहुत मुआफ करने वाला हैं, मुआफी व दरगुज़र को पसन्द करता हैं पस मुझे मुआफ फरमा दे।)

(सुनन तिरमिज़ी, जि. 5, स. 534, हदीस 3513)

शबे क़द्र के नवाफिल

- ❖ जो कोई शबे क़द्र में सूरह क़द्र 7 बार पढ़ता हैं, अल्लाह उसे हर बला से महफ़ूज़ फरमा देता हैं और सत्तर हज़ार फरिश्ते उसके लिए जन्नत की दुआ करते हैं।
- ❖ **2 रकअतः-** हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह क़द्र 1 बार और सूरह इख्लास 100 बार पढ़े। सलाम के बाद 100 बार दरूद शरीफ पढ़े। सवाबे अज़ीम हासिल हो।
- ❖ **4 रकअतः- (2-2 करके)** हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह क़द्र 1 बार और सूरह इख्लास 27 बार पढ़े। अल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से तमाम गुनाह माफ फरमाएगा और जन्नते मुअल्ला में मक़ाम अता फरमाएगा।
- ❖ **4 रकअतः- (एक सलाम से)** हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह क़द्र 3 बार और सूरह इख्लास 17 बार पढ़े। अल्लाह तआला सकराते मौत आसान करेगा और अज़ाबे क़ब्र दूर फरमाएगा।
- ❖ **4 रकअतः- (2-2 करके)** हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह क़द्र 3 बार और सूरह इख्लास 50 बार पढ़े। सलाम के बाद सज्दे में जाकर दरूद पढ़कर जो दुआ मांगे क़बूल हो।
- ❖ **2 रकअतः-** हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह क़द्र 7 बार और सूरह इख्लास 7 बार पढ़े। सलाम के बाद अस्तग़फार और दरूद शरीफ पढ़े। अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को और उसके मां-बाप को बख्श देगा।

- **20 रकअतः- (2-2 करके)** हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह इख्लास 21 बार पढ़े । पढ़ने वाला अपने गुनाहों से इस तरह पाक हो जाएगा गोया अभी अभी पैदा हुआ हो । और इसमें पढ़े गए हर हर्फ के बदले में उसके लिए जन्नत में एक शहर बनाया जाएगा और उस शहर में इस क़द्र हूरें होंगी कि उनका शुमार सिर्फ अल्लाह ही को मालूम हैं ।
- सलातुत्तस्बीह - 4 रक्अत एक सलाम के साथ । इस नमाज़ में 300 मर्तबा **सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व लाइलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर** पढ़ी जाती हैं । इसे पढ़ने का तरीक़ा - पहली रक्अत में सना के बाद 15 मर्तबा यह तस्बीह पढ़े फिर सुरह फातिहा (अल्हम्दुलिल्लाह) फिर कोई एक सुरह फिर 10 मर्तबा यह तस्बीह फिर रुकुअ में सुब्हान रब्बीयल अज़ीम के बाद 10 मर्तबा यह तस्बीह फिर रुकुअ से खड़े होकर 10 मर्तबा यह तस्बीह फिर सज्दे में सुब्हान रब्बीयल आला के बाद 10 मर्तबा यह तस्बीह फिर सज्दे से उठकर 10 मर्तबा यह तस्बीह फिर दूसरे सज्दे में सुब्हान रब्बीयल आला के बाद 10 मर्तबा यह तस्बीह । दूसरी, तीसरी और चौथी रक्अतें सना के अलावा इसी तरतीब से पढ़ें । रसूलअल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हो सके तो सलातुत्तस्बीह हर रोज़ पढ़े या हफ्ते में एक बार या महीने में एक बार या साल में एक बार या कम से कम पूरी जिन्दगी में एक बार ।

नेकियों में इज़ाफा

हदीस नं. 30) हज़रत अबू हुरैराह (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जो दिन में 100 मर्तबा ये कलमात कहेः- **ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरी-क लहु लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु वहु-व अला कुल्लि शय्इन् क़दीर** । तो उसके लिए 10 गुलाम आज़ाद करने का सवाब हैं और उसके लिए 100 नेकियां लिख दी जाती हैं और उसकी 100 बुराइया मिटा जाती हैं और उस दिन शाम तक ये अमल उसके लिए शयातीन से बचाव का सबब होता हैं और उस से बढ़कर किसी का अमल नहीं होगा सिवाए उसके जो ऐसा अमल उससे बढ़कर करे ।

(सहीह बुखारी, जि. 5, स. 2351, हदीस 6040, 6041)

हदीस नं. 31) हज़रत सआद (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि हम रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास बैठे थे । आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, क्या तुम में से कोई शख्स हर रोज़ एक हज़ार नेकियां करने से आजिज़ (कमज़ोर) हैं ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास बैठे हुए लोगों में से एक ने सवाल किया, हम में से कोई शख्स 1000 नेकियां कैसे कर सकता हैं ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, वह

100 मर्तबा **सुब्हानल्लाह** कहे। उसके लिए 1000 नेकियां लिखी जाएगी या 1000 गुनाह मिटा दिए जाएँगे।

(सहीह मुस्लिम, जि. 8, स. 71, हदीस 7027)

हदीस नं. 32) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, हर चीज़ का एक दिल हैं और क़ुरआन का दिल सूरह यासीन हैं। जिसने सूरह यासीन पढ़ी अल्लाह तआला उसके लिए 10 मर्तबा कुरआन पढ़ने का सवाब लिखेगा।

(सुनन तिरमिज़ी, जि. 5, स. 149-150, हदीस 2887)

हदीस नं. 33) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ीअल्लाहु अन्हु) रिवायत करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जो शख्स रोज़ाना 200 मर्तबा सूरह इख्लास (क़ुल हुवल्लाहु अहद) पढ़े, उसके 50 साल के गुनाह मिटा दिए जाते हैं सिवाए इसके कि उसपर क़र्ज़ हो।

(सुनन तिरमिज़ी, जि. 5, स. 154-155, हदीस 2898)

हदीस नं. 34) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ीअल्लाहु अन्हु) रिवायत करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जो मुझपर एक मर्तबा दरूद भेजता हैं अल्लाह उसपर दस मर्तबा दरूद (रहमत की सूरत में) भेजता हैं, और उसके दस

गुनाह मुआफ कर दिए जाते हैं और उसके दस दर्जे बुलन्द कर दिए जाते हैं।

(सुनन निसाई, जि. 3, स. 50, हदीस 1297)

हदीस नं. 35) हज़रत जाबिर (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से मरवी हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जिसने कहा **सुब्हानल्लाहिल् अज़ीमी व बिहम्दिहि** तो उसके लिए जन्नत में खजूर का एक दरख्त लगा दिया गया।

(सुनन तिरमिज़ी, जि. 5, स. 511, हदीस 3464)

हदीस नं. 36) हज़रत मुआज़ बिन अनस (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जिसने मुकम्मल सूरह इख्लास (क़ुल हुवल्लाहु अहद) 10 मर्तबा पढ़ी, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल बना देगा। हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ीअल्लाहु अन्हु) ने अर्ज किया, या रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), फिर तो हम बहुत से महल बना लेंगे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, अल्लाह तआला कसीर (ज़्यादा) और निहायत उम्दा अज्र अता फरमाने वाला हैं।

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 3, स. 437, हदीस 15648)

हदीस नं. 37) हज़रत जाबिर (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, जो

शख्स एक दिन में मुझपर 100 मर्तबा दरूद भेजता हैं, अल्लाह उसकी 100 हाजतें पूरी फरमाता हैं । उनमें से 70 हाजतों का तआल्लुक़ उसकी आखिरत से हैं और 30 का उसकी दुनिया से ।

(कन्ज़ुल् उम्माल, जि. 1, स. 505, हदीस 2232)

जुदा हो रहा हैं ये रमज़ां महीना

जुदा हो रहा हैं ये रमज़ां महीना,
ये रहमत व बरकत का रमज़ां महीना।
खुदा से वो लाया खुदा के खज़ाने,
लुटा कर चला हैं ये रमज़ां महीना।

वो सुब्ह की सेहरी और रोज़े की रौनक,
वो शाम सलोनी और नूरी तरावीह,
शबे क़द्र की बेपनाह वो दौलत,
हैं रहमत व बरकत का रमज़ां महीना।

तुझे फिरसे मिलने को तरसेगा ये दिल,
तेरे ग़म की आहों में तड़पेगा ये दिल,
अगर मौत आई तो कैसे मिलेगा,
दोबारा हमें तु ऐ रमज़ां महीना।

तेरी शानो शौकत से गाफिल रहे हम,
तेरी क़द्र दानी से काहिल रहे हम,
जुदाई से तेरी हैं ग़मगीं मुसलमां,
तू मेहमां बना हैं ऐ रमज़ां महीना।

जहन्नम की वादी से हमको बचाना,
खुदा के ग़ज़ब और कहर से बचाना,
क़यामत के दिन हमपे होना गवाह तू,
ऐ रमज़ां महीना ऐ रमज़ां महीना ।

सियाहकार हूं मैं मुझे ये बताया,
मेरे फख्र की जड़ को तूने मिटाया,
गुलामे हुसैन आज तुझे खो रहा हैं,
तू मिलना उसे फिर ऐ रमज़ां महीना ।

- मुहम्मद इमरान

ईदुल् फित्र

ईदः- मेहनत और मजदूरी करने वाले को इन्आम मिलने का दिन हैं।

जिसने भी माहे रमज़ान में इबादत व रियाज़त में मेहनत की, अल्लाह तआला की रज़ा की खातिर रोज़े रखे, भलाई के काम करता रहा, बुराई से बचता रहा, ग़रीबों की मदद की, सिर्फ और सिर्फ ऐसे शख्स के लिए ईद और ईद की खुशियां हैं। वरना जिसने कोई मेहनत ही नहीं की उसे इन्आम से क्या मतलब ? ईद सिर्फ अच्छे कपड़े पहनने और अच्छे पकवान खाने का नाम नहीं हैं।

हदीस नं. 38) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सदक़ा-ए-फित्र ईद की नमाज़ को जाने से पहले अदा करने का हुक्म दिया।

(सहीह मुस्लिम, जि. 2, स. 679, हदीस 986)

हदीस नं. 39) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ीअल्लाहु अन्हु) ने फरमाया कि रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सदक़ा-ए-फित्र को वाजिब फरमाया, जो रोज़ादार को खताओं और बेहूदा बातों से पाक़ करने वाला हैं और ग़रीबों की ग़िज़ा(खाने) के

लिए हैं । जिसने ईद की नमाज़ से पहले इसे अदा किया तो यह मक़्बूल ज़क़ात हैं और जिसने इसे ईद की नमाज़ के बाद अदा किया तो यह दूसरे सदक़ात की तरह एक सदक़ा होगा ।

(सुनन अबू दाऊद, जि. 2, स. 111, हदीस 1609)

हदीस नं. 40) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ीअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि ईदुल् फित्र के दिन रसूलअल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उस वक़्त तक ईदगाह तशरीफ न ले जाते जब तक चन्द खजूरें न खा लेते ।

(सहीह बुखारी, जि. 1, स. 325, हदीस 910)